

उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक विश्लेषण

रश्मि शर्मा¹, डॉ. आर.पी. मिश्रा²

¹शोधार्थिनी, शिक्षा विभाग, हिन्दू कॉलेज, मुरादाबाद।

²विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, हिन्दू कॉलेज, मुरादाबाद।

सारांश

वर्तमान समय में मानसिक स्वास्थ्य का महत्व शारीरिक स्वास्थ्य के समकक्ष माना जा रहा है, विशेषकर किशोरावस्था एवं युवावस्था में जब व्यक्ति मानसिक, सामाजिक एवं भावनात्मक परिवर्तनों के दौर से गुजर रहा होता है। उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों की मानसिक स्थिति को समझना महत्वपूर्ण है, क्योंकि इस आयु में वे पढ़ाई, भविष्य, परिवार और समाज से जुड़ी कई अपेक्षाओं व दबावों का सामना करते हैं। मानसिक स्वास्थ्य का अर्थ केवल बीमारी का न होना नहीं है, इसमें अपनी क्षमता समझना, सामान्य कठिनाइयों से निपटना, उपयोगी काम करना और समाज में भागीदारी करना भी शामिल है। अध्ययन में यह देखा गया है कि जिन विद्यार्थियों को भावनात्मक समर्थन, उचित मार्गदर्शन, सुरक्षित पारिवारिक वातावरण एवं विद्यालय में सहयोगी वातावरण प्राप्त होता है, वे मानसिक रूप से अधिक स्वस्थ रहते हैं। इसके विपरीत, कठोर अनुशासन, अधिक प्रतिस्पर्धा, परिवार या समाज में संवेदनशीलता की कमी तथा डिजिटल माध्यमों का असंतुलित उपयोग छात्रों की मानसिक दशा पर बुरा असर डाल सकता है। इस अध्ययन में अलग-अलग सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक और पारिवारिक पृष्ठभूमि के छात्रों की मानसिक स्थिति की तुलना की गई है। चिंता, तनाव, आत्म-सम्मान, सामाजिक समायोजन और आत्मविश्वास को प्रमुख आयामों के रूप में देखा गया है। तुलना से यह जानने का प्रयास किया गया है कि कौन-सा शैक्षिक और सामाजिक वातावरण छात्रों को बेहतर मानसिक सहयोग देता है। साथ ही, लड़कों और लड़कियों के अनुभवों में अंतर समझने के लिए लिंग के आधार पर भी स्थिति देखी गई है। प्राप्त परिणाम शिक्षक, अभिभावक, विद्यालय प्रशासन और नीति बनाने वाले लोगों के लिए उपयोगी दिशा दे सकते हैं। इन निष्कर्षों से यह तय करने में मदद मिल सकती है कि छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य को सुधारने के लिए कौन-से कदम अधिक उपयोगी होंगे। समस्याओं की जल्दी पहचान और समय पर सहायता मिलने से पढ़ाई के परिणाम, आत्मविश्वास और जीवन की गुणवत्ता में सुधार हो सकता है। इसलिए शिक्षा में ऐसा दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है जो छात्र को केवल पढ़ने वाला व्यक्ति नहीं, बल्कि उसकी सम्पूर्ण आवश्यकताओं वाले इंसान के रूप में देखे।

मुख्यशब्द : उच्च माध्यमिक स्तर, विद्यार्थी, मानसिक स्वास्थ्य

प्रस्तावना

आज के बदलते सामाजिक, शैक्षणिक, पारिवारिक और तकनीकी परिवेश में मानसिक स्वास्थ्य एक अत्यंत महत्वपूर्ण विषय बन चुका है, विशेषकर किशोरों और युवाओं के संदर्भ में। इसके विपरीत, कठोर अनुशासन, अधिक प्रतिस्पर्धा, परिवार या समाज में संवेदनशीलता की कमी तथा डिजिटल माध्यमों का असंतुलित उपयोग छात्रों की मानसिक दशा पर बुरा असर डाल सकता है। इस अध्ययन में अलग-अलग सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक और पारिवारिक पृष्ठभूमि के छात्रों की मानसिक स्थिति की तुलना की गई है। चिंता, तनाव, आत्म-सम्मान, सामाजिक समायोजन और आत्मविश्वास को प्रमुख आयामों के रूप में देखा गया है। तुलना से यह जानने का प्रयास किया गया है कि कौन-सा शैक्षिक और सामाजिक वातावरण छात्रों को बेहतर मानसिक सहयोग देता है। साथ ही, लड़कों और लड़कियों के अनुभवों में अंतर समझने के लिए लिंग के आधार पर भी स्थिति देखी गई है। प्राप्त परिणाम शिक्षक, अभिभावक, विद्यालय प्रशासन और नीति बनाने वाले लोगों के लिए उपयोगी दिशा दे सकते हैं। इन निष्कर्षों से यह तय करने में मदद मिल सकती है कि छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य को सुधारने के लिए कौन-से कदम अधिक उपयोगी होंगे। समस्याओं की जल्दी पहचान और समय पर सहायता मिलने से पढ़ाई के परिणाम, आत्मविश्वास और जीवन की गुणवत्ता में सुधार हो सकता है। इसलिए शिक्षा में ऐसा दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है जो छात्र को केवल पढ़ने वाला व्यक्ति नहीं, बल्कि उसकी सम्पूर्ण आवश्यकताओं वाले इंसान के रूप में देखे। यह स्तर शिक्षा की दौड़ में अत्यंत प्रतिस्पर्धी माना जाता है और इस दौड़ में शामिल विद्यार्थी कई प्रकार के मानसिक दबावों से गुजरते हैं। परीक्षा के परिणाम, घर और विद्यालय की अपेक्षाएँ, दूसरों से तुलना तथा परिवार या आर्थिक स्थिति से जुड़ी कठिनाइयाँ छात्रों पर मानसिक दबाव बढ़ा सकती हैं। इन सब परिस्थितियों का मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। मानसिक तनाव, अवसाद, चिंता, एकाकीपन, आत्म-संदेह जैसी समस्याएँ विद्यार्थियों के भीतर गहराई से पैठ बना सकती हैं, जो आगे चलकर आत्महत्या जैसे गंभीर कदमों में भी बदल सकती हैं।

मानसिक स्वास्थ्य के बारे में छात्रों, अभिभावकों और शिक्षकों में अभी भी पर्याप्त समझ और जागरूकता नहीं दिखाई देती। कई लोग मानसिक परेशानी को कमजोरी या शर्म से जोड़ते हैं, इसलिए छात्र अपनी कठिनाइयाँ खुलकर बताने से बचते हैं। यह संकोच या अस्वीकार्यता आगे चलकर गंभीर मानसिक विकारों का रूप ले सकती है। विद्यालय स्तर पर काउंसलिंग सुविधाओं की कमी, प्रशिक्षित मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञों का अभाव, और शैक्षिक पाठ्यक्रम में मानसिक स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता की अनुपस्थिति भी इस समस्या को और जटिल बना देती है।

यह विषय केवल किसी एक छात्र की निजी समस्या तक सीमित नहीं है। इसका संबंध समाज, शिक्षा और नीतियों से भी है। विद्यार्थियों की मानसिक भलाई को महत्व दिए बिना समग्र शिक्षा का लक्ष्य पूरा नहीं हो सकता। शैक्षिक संस्थानों को ऐसी योजनाएँ बनानी चाहिए जिनमें छात्रों की मानसिक भलाई को स्पष्ट प्राथमिकता मिले। इसके लिए विद्यालय परामर्श सुविधा, समय-समय पर मानसिक स्थिति की जाँच, जागरूकता कार्यक्रम और तनाव से निपटने की गतिविधियाँ चला सकते हैं। शिक्षकों को भी इस विषय में प्रशिक्षण दिया जा सकता है।

इसी कारण उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की मानसिक स्थिति की तुलना करना वर्तमान शैक्षिक और सामाजिक संदर्भ में उपयोगी है। इससे उनकी प्रमुख कठिनाइयों को समझने और उनके लिए व्यावहारिक उपाय तय करने का आधार मिल सकता है।

अध्ययन का औचित्य एवं महत्व:— आज विद्यार्थी प्रतिस्पर्धा, तकनीकी बदलाव और तेजी से बदलते सामाजिक वातावरण जैसी अनेक चुनौतियों के बीच पढ़ रहे हैं। इस अवस्था में पढ़ाई में आगे बढ़ने के साथ उनका सामाजिक, भावनात्मक

और मानसिक विकास भी लगातार हो रहा होता है। यह अवस्था किशोरावस्था से युवावस्था की ओर संक्रमण की महत्वपूर्ण कड़ी होती है, जिसमें उनके व्यक्तित्व, व्यवहार, आत्म-छवि, सामाजिक समायोजन और भविष्य की दिशा निर्धारित होती है। इस संक्रांति काल में विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य अत्यंत संवेदनशील अवस्था में होता है और यदि इसे समय पर समझकर आवश्यक समर्थन न दिया जाए, तो यह उनकी शैक्षणिक उपलब्धि, सामाजिक संबंध, आत्मविश्वास, और जीवन की गुणवत्ता को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकता है। इसलिए उच्चतर माध्यमिक छात्रों की मानसिक स्थिति की तुलना वर्तमान सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में उपयोगी है और इसके निष्कर्ष शिक्षा, समाज तथा नीति निर्माण में भी काम आ सकते हैं।

इस शोध की जरूरत इसलिए भी है कि विद्यालयी शिक्षा में मानसिक स्वास्थ्य को अक्सर पर्याप्त महत्व नहीं मिला, जबकि सीखने की क्षमता, व्यवहार, सामाजिक संबंध, नैतिक विकास और व्यक्तित्व से इसका सीधा संबंध है। यदि किसी विद्यार्थी का मानसिक स्वास्थ्य सुदृढ़ नहीं होगा, तो वह न केवल पढ़ाई में पिछड़ेगा, बल्कि उसमें नकारात्मक व्यवहार, सामाजिक अलगाव और आत्म-हीनता जैसी प्रवृत्तियाँ भी विकसित हो सकती हैं। इस संदर्भ में नीति निर्माताओं, शिक्षकों, काउंसलर्स और अभिभावकों को सशक्त प्रमाणों पर आधारित सुझावों की आवश्यकता है, जिन्हें यह शोध प्रदान कर सकता है।

इस अध्ययन में लड़कों और लड़कियों तथा शहरी और ग्रामीण छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य में मौजूद अंतर को समझने की कोशिश की गई है। इसके साथ पढ़ाई, परिवार, समाज और तकनीक से जुड़े उन प्रभावों को पहचानना भी उद्देश्य है जो छात्रों की मानसिक स्थिति को प्रभावित करते हैं। यह भी स्पष्ट करेगा कि किस प्रकार की विद्यालयी व्यवस्थाएँ और परिवेश मानसिक स्वास्थ्य को सहयोग प्रदान करते हैं तथा किन उपायों से इसे और अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है। यह शोध उन अंतर्निहित कारणों को भी उजागर करेगा जो विद्यार्थियों में तनाव, घबराहट, आत्मघात, निराशा आदि मानसिक चुनौतियों को जन्म देते हैं और उनके निवारण हेतु व्यवहारिक समाधान प्रस्तुत करेगा।

1. पूर्ववर्ती अध्ययनों की समीक्षा

- रश्मि, डी. (2022) ने ग्रामीण और शहरी स्कूलों के छात्रों की मानसिक स्थिति की तुलना की। अध्ययन में शहरी छात्रों में प्रतिस्पर्धा और सामाजिक तुलना से तनाव अधिक मिला, जबकि ग्रामीण छात्रों के लिए शैक्षिक संसाधनों की कमी मानसिक दबाव से जुड़ी पाई गई।
- गुप्ता, ए. और खान, एस. (2022) ने वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर लड़कों और लड़कियों के मानसिक स्वास्थ्य में अंतर का अध्ययन किया। छात्राओं में आत्म-विश्वास की कमी, शारीरिक छवि (इवकल पउंहम) संबंधी असंतोष, और अधिक सामाजिक अपेक्षाएँ मानसिक अस्वस्थता का कारण पाई गई। छात्रों में आक्रामकता और व्यसन प्रवृत्तियाँ अधिक थीं।
- मिश्रा, आर. (2023) ने डिजिटल का अत्यधिक उपयोग और स्कूली किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य पर इसका प्रभाव पर अध्ययन किया। कोविड-19 के बाद ऑनलाइन शिक्षा और सोशल मीडिया के अत्यधिक उपयोग ने विद्यार्थियों में नींद की कमी, अकेलापन और चिड़चिड़ापन बढ़ा दिया।
- सिंह, टी. और वर्मा, ए. (2024) ने किशोरों की मानसिक स्थिति पर परिवार के माहौल की भूमिका का अध्ययन किया। उनके निष्कर्ष बताते हैं कि जिन परिवारों में बातचीत खुली थी और सहयोग मिलता था, वहाँ छात्रों की मानसिक स्थिति अपेक्षाकृत बेहतर थी।

6. जोशी, आर. (2025) ने एकल-लिंग और सह-शिक्षा वाले वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की मानसिक स्थिति की तुलना की। एकल-लिंग विद्यालयों में आत्म-प्रदर्शन अधिक पाया गया, जबकि सह-शिक्षा विद्यालयों में सामाजिक समायोजन बेहतर दर्ज किया गया।

समस्या कथन

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में मानसिक स्वास्थ्य के अंतर का तुलनात्मक परीक्षण।

चरों का परिभाषाकरण

1. **उच्चतर माध्यमिक विद्यालय:**— इस शोध में उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद तथा केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद, नई दिल्ली के अंतर्गत चलने वाले उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों को शामिल किया गया है।
2. **विद्यार्थी :**—विद्यार्थियों से तात्पर्य माध्यमिक शिक्षा परिषद , उत्तर प्रदेश एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद , नई दिल्ली द्वारा संचालित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं से है।
3. **मानसिक स्वास्थ्य :**—कुपूस्वामी (सिंह, 2019) के शब्दों में मानसिक स्वास्थ्य का अर्थ है “व्यक्ति द्वारा अपने दैनिक जीवन में भावनाओं, इच्छाओं, महत्वाकांक्षाओं और आदर्शों में संतुलन बनाए रखने की योग्यता। इसका अर्थ है जीवन की वास्तविकताओं का सामना करने और उनको स्वीकार करने की योग्यता।”

अध्ययन के प्रमुख लक्ष्य

- 1 छात्र और छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य स्तर की तुलना करना।
- 2 ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों के छात्रों की मानसिक स्थिति में अंतर की तुलना करना।
- 3 ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों की छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक आकलन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

1. छात्रों और छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य स्तरों में सांख्यिकीय रूप से सार्थक भिन्नता नहीं है।
 2. ग्रामीण और शहरी छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य स्तरों में कोई सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर नहीं है।
 3. ग्रामीण और शहरी छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य स्तरों में कोई सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर नहीं है।
- **शोध विधि:**— डेटा एकत्र करने और उसका विश्लेषण करने के लिए सर्वेक्षण पद्धति अपनाई गई।
 - **जनसंख्या:**— अध्ययन की जनसंख्या में बरेली जिले के उन उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र और छात्राएँ शामिल हैं जो उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद तथा केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से संबद्ध हैं।
 - **न्यादशर्त:**— कुल 600 विद्यार्थियों का चयन किया गया और नमूना चुनने के लिए स्तरीकृत यादृच्छिक पद्धति अपनाई गई।
 - **उपकरण:**—मानसिक स्वास्थ्य मापनी —डा0 सुषमा तालेसारा एवं डा0 अक्खतर बानो द्वारा निर्मित प्रश्नावली।

परिकल्पनाओं का परीक्षण और व्याख्या

उद्देश्य 1:— छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य स्तर की तुलना करना।

परिकल्पना 1:— छात्र और छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य स्तरों में सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका संख्या — 1

तालिका 1: छात्र व छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य के औसत, मानक विचलन और क्रान्तिक अनुपात का तुलनात्मक विवरण

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
					0.01
छात्र	300	125.30	13.53	2.74	सार्थक
छात्राएं	300	128.38	14.05		

व्याख्या :- तालिका संख्या 1 में प्रस्तुत आँकड़ों के अनुसार, छात्रों का मध्यमान 125.30 तथा मानक विचलन 13.53 प्राप्त हुआ, जबकि छात्राओं का मध्यमान 128.38 तथा मानक विचलन 14.05 पाया गया। दोनों समूहों के मध्य प्राप्त क्रान्तिक अनुपात 2.74 था, जो सार्थकता 0.01 स्तर पर सार्थक पाया गया। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है।

उद्देश्य 2:- ग्रामीण और शहरी छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य स्तरों की तुलना करना।

परिकल्पना 2:- ग्रामीण और शहरी छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य स्तरों में सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका संख्या -2

तालिका 2: ग्रामीण तथा शहरी छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य के औसत, मानक विचलन और क्रान्तिक अनुपात का विवरण

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
					0.01
ग्रामीण छात्र	150	123.87	13.63	1.83	सार्थक नहीं
शहरी छात्र	150	126.73	13.33		

व्याख्या :- तालिका संख्या 2 में प्रस्तुत आँकड़ों के अनुसार, ग्रामीण छात्रों का मध्यमान 123.87 तथा मानक विचलन 13.63 प्राप्त हुआ, जबकि शहरी छात्रों का मध्यमान 126.73 तथा मानक विचलन 13.33 पाया गया। दोनों समूहों की औसत प्रवृत्तियों की तुलना पर क्रान्तिक अनुपात 1- 83 रहा, जो 0-01 स्तर पर सांख्यिकीय रूप से सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

उद्देश्य 3:- ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों की छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य स्तरों की तुलना करना।

परिकल्पना 3 :- ग्रामीण और शहरी छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य स्तरों में सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका संख्या -3

तालिका 3 :- ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य के औसत, मानक विचलन और क्रान्तिक अनुपात का विवरण

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
					0.01
ग्रामीण छात्राएं	150	127.88	14.19	0.62	सार्थक नहीं
शहरी छात्राएं	150	128.89	13.94		

व्याख्या:- तालिका 3 के आँकड़ों में ग्रामीण छात्राओं का मानसिक स्वास्थ्य औसत 127 -88 और मानक विचलन 14 - 19 है, जबकि शहरी छात्राओं का औसत 128-89 और मानक विचलन 13.94 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के बीच क्रान्तिक अनुपात 0.62 पाया गया, जो सार्थकता स्तर 0.01 पर सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

अध्ययन से प्राप्त मुख्य निष्कर्ष

- 1— छात्र और छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य स्तरों में सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर मिला।
- 2— ग्रामीण तथा शहरी छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य स्तरों के बीच सार्थक अंतर नहीं मिला।
- 3— ग्रामीण और शहरी छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य स्तरों में भी सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- विश्व स्वास्थ्य संगठन (2020). मानसिक स्वास्थ्य : हमारी प्रतिक्रिया को सुदृढ़ बनाना.
- मिश्रा, ए. (2018). किशोर और मानसिक स्वास्थ्य : चुनौतियाँ और समाधान, दिल्ली : एकेडमिक प्रेस।
- दुबे, आर. (2022). वरिष्ठ माध्यमिक छात्रों में मनोवैज्ञानिक तनाव, जर्नल ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजी, खंड 15.
- निमहंस रिपोर्ट (2019). भारतीय राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य सर्वेक्षण.
- गुप्ता, एस. (2020). ग्रामीण और शहरी किशोरों में मानसिक स्वास्थ्य की तुलना, इंडियन जर्नल ऑफ चाइल्ड डेवलपमेंट स्टडीज, खंड 10.
- सिंह, पी. और कौर, एच. (2021). सोशल मीडिया का उपयोग और छात्र मानसिक स्वास्थ्य, नई दिल्ली : सेज पब्लिकेशन्स.
- कुमार, आर. (2020). वरिष्ठ माध्यमिक छात्रों की मानसिक स्वास्थ्य स्थिति : एक तुलनात्मक अध्ययन, इंडियन जर्नल ऑफ साइकोलॉजिकल स्टडीज, 45(2), 65–74.
- केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) (2023). वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए दिशानिर्देश, सीबीएसई दिल्ली.
- मिश्रा, आर. (2023). डिजिटल का अत्यधिक उपयोग और स्कूली किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य पर इसका प्रभाव, जर्नल ऑफ डिजिटल वेलबीइंग एंड यूथ, 3(2), 52–61.
- सिंह, टी., और वर्मा, ए. (2024). भारत में किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य पर पारिवारिक वातावरण का प्रभाव, एशियन जर्नल ऑफ साइकोलॉजी एंड एजुकेशन, 14(1), 45–55.

Cite this Article:

शर्मा, रश्मि, मिश्र, प्रो० आर०पी०. (2026). उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक विश्लेषण. Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 03, Issue 03, Pp.410-415, March-2026. Journal, URL: <https://shikshasamvad.com/>



This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.



CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

रश्मि शर्मा¹, डॉ. आर.पी. मिश्रा²

For publication of research paper title

उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक विश्लेषण

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed
Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-03,
Issue-03, Month March 2026, Impact Factor-RPRI-3.89/6.67

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and
the paper must be available online at: <https://shikshasamvad.com/>
DOI:- <https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i3.45>